

सूरह तारिक^[1] - 86

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरह तारिक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफ़िरो को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है आकाश तथा रात के
"प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝

- 1 इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया है:
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अल्लाह के सामने उपस्थित होना है।
दूसरा यह कि कुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफ़िरो) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?
3. वह ज्योतिमय सितारा है।
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।^[1]
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?
6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।^[2]
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।
10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।^[3]
11. शपथ है आकाश की जो बरसता है!
12. तथा फटने वाली धरती की।
13. वास्तव में यह (कुर्आन) दो टुक निर्णय (फैसला) करने वाला है।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّنَا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

وَالسَّمَاءُ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

وَالْأَرْضُ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝

- 1 (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वयं अल्लाह है।
- 2 (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं।^[1]
 15. वह चाल बाज़ी करते हैं।
 16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।
 17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर
 दे दो।^[2]

وَمَا هِيَ إِلَّا هَزْلٌ
 إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا
 وَأَكِيدُ كَيْدًا
 فَمَهْلُ الْكَافِرِينَ أَهْلُهُمْ رُؤُوسًا

- 1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुर्आन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं हैं पक्की और अडिग बातें हैं। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुर्आन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।
- 2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।
 और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।